आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:10-09-14

हमारी भक्ति मार्ग की भूलो को सुधार कर, ज्ञान से सत्य मार्ग दिखलाने वाले, सच्चे गीता ज्ञान-दांता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - जैसे तुम्हें इस बात का निश्चय है कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं, वह हमारा प्यारा-प्यारा पिता हैं, ऐसे दूसरों को समझाकर निश्चय कराओ फिर उनसे ओपीनियन लो.

बाबा ने आज हमें, दूसरों को ज्ञान देकर चार बातों का निश्चय करवाने को कहा हैं - १. ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं. २. गीता का भगवान शिवबाबा हैं, श्रीकृष्ण नहीं. ३. यह सारा कल्प ५ हजार साल का ही हैं, न की लाखों वर्ष का. ४. पतित-पावनी गंगा नहीं परन्तु परमपिता-परमात्मा शिव हैं.

यह चारों बातों पर विचार-सागर-मंथन करें तो बहुत कुछ लिख सकते है. इसलिए बाबा की आज की मुरली से ही कुछ पॉइन्टस निकाल कर यहॉ लिखेंगे तो हमें उस पर और विचार-सागर-मंथन कर दूसरों को समझाने में मदद मिलेगी.

१. ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं. - यह तो बाप ने समझाया है की मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ. अभी सर्वव्यापक तो ५ विकार हैं. जो हर मनुष्य में है और इसलिए ही हरेक मनुष्य आज दुखी है. ईश्वर तो सर्व का सद्गति दांता हैं. सर्व को सुख और शांति प्रदान करता हैं. ईश्वर को सर्वव्यापी कहना तो ईश्वर की सबसे बडी ग्लानि हैं. अगर ईश्वर सर्वव्यापी होगा तो सारे संसार में इतने लड़ाई-झगड़े कैसे हो सकते है?, इतना दुख-अशांति कैसे हो सकती है?

२. गीता का भगवान शिवबाबा हैं, श्रीकृष्ण नहीं. - भगवान या ईश्वर कोई मनुष्य या देवी-देवता को नहीं कहा जाता. भगवान तो एक है और वह सर्व-आत्माओं का पिता है. श्रीकृष्ण को तो विश्व की सर्व-आत्माये पिता या भगवान भी नहीं मानेगी. एक चैतन्य ज्योति स्वरूप, परमपिता-परमात्मा, निराकार शिव के लिए ही कह सकते हैं की वह हम सब आत्माओं का पिता हैं और क्योंकि वह ज्योति स्वरूप हैं उसे सर्व-धर्म कि आत्माये भी पिता मानती हैं. वह मनुष्यों ने लिखी गीता से राजाई थोड़ी प्राप्त होती है, यहॉ परमात्मा की सच्ची गीता सुनकर और ज्ञान को अपने में धारण करने से हम सतयुग में सारे विश्व के मालिक बनेंगे.

३. यह सारा कल्प ५ हजार साल का ही हैं, न की लाखों वर्ष का. - शास्त्रों में यह बड़ी भूल कि है की सृष्टि चक्र को लाखों वर्ष का कह दिया हैं. इसलिए समझते है की कलियुग तो अभी बच्चा है. पहले सन्यासी भी कल्प की आयु के बारे में नेती-नेती करते थे. रचयिता बाप ने हमें समझाया की इस सृष्टि का रचयिता, परमात्मा स्वयं आकर ही रचना के आदि-मध्य-अंत का सच्चा ज्ञान दे सकते हैं. बाबा ने कहा है यह सारा कल्प तो ५ हजार वर्ष का ही हैं, जिसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग - ऐसे चार भाग हैं और हर भाग १२५० वर्ष का ही हैं. इस के रिलेटेड ही एक और बात कि भगवान युगे-युगे नहीं पर कल्प के अन्त में यानी कलियुग के अन्त में और सतयुग शुरू होने से पहले, संगम पर ही आते हैं.

४. पतित-पावनी गंगा नहीं परन्तु परमपिता-परमात्मा शिव हैं. - यह बात तो बहुत सिम्पल हैं और अभी तो कई समझते भी हैं की गंगा के पानी से आत्मा में रहे मैल नहीं धुल सकते. उसके लिए तो आत्मा को परमात्मा से योग करना पड़े. योग-अग्नि से ही आत्मा में रहे विकार रूपी मैल को जलाकर राख कर सकते हैं. जब आत्मा में से संपूर्ण विकार निकल जाये तब आत्मा पतित से संपूर्ण पावन-पवित्र बने और अपने घर वापस परमधाम जा सके.

ॐ शांति.